विश्व न्याय मन्दिर

28 दिसंबर 1999

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रो,

चार वर्षीय योजना के दौरान, हमने 'किताब-ए-अकदस' के उन विधानों का पुनर्वलोकन किया है जो अभी पूरे विश्व में लागू नहीं हैं, ताकि यह तय किया जा सके कि अब उनमें से किन विधानों को लागू किया जाना समयोचित होगा।

सभी स्थानों पर हमें आध्यात्मिक जीवन और नैतिक स्पष्टता के लिए बढ़ती हुई पिपासा का बोध हो रहा है। मानव की बेहतरी के लिए उन योजनाओं और कार्यक्रमों को निष्फल माना जाने लगा है जिनकी जड़ें आध्यात्मिक चेतना और नैतिक सदाचार में गड़ी हुई नहीं हैं। इस उत्कंठा को शांत करने के लिए उनसे बेहतर भला और कौन लोग सुसज्जित हो सकते हैं जिन्हें पहले से ही बहाउल्लाह की शिक्षाओं की प्रेरणा और उनकी शक्ति की सहायता प्राप्त है?

अतः हमने यह तय किया है कि सभी धर्मानुयायियों के लिए यह उपयुक्त है कि वे उन विधानों से प्राप्त आशीषों के बारे में अपनी जागरूकता और अधिक गहन बनाएं जो व्यक्तियों और इस तरह समुदायों के भक्तिपरक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से संपोषित करते हैं। इन विधानों के अनिवार्य तत्वों से सभी धर्मानुयायी अवगत हैं, किन्तु उनके महत्व के बारे में और अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के कार्य में यह भी आवश्यक रूप से शामिल होगा कि उनके अनुपालन से सम्बंधित दिव्य रूप से प्रकटित सभी पहलुओं का पालन किया जाए। ये वे विधान हैं जो अनिवार्य प्रार्थना, उपावास और प्रति दिन पंचानवे बार 'महानतम नाम' का पाठ करने से सम्बंधित हैं।

बहाउल्लाह कहते हैं: *"जो व्यक्ति न तो अच्छे कार्य करता है और न ही आराधना वह एक फलहीन वृक्ष की तरह है, वह अपने काम की कोई निशानी नहीं छोड़ जाता। जिस किसी ने भी आराधना के पवित्र आनन्द का आस्वाद ग्रहण किया है वह संसार की किसी भी वस्तु के बदले उस कार्य या ईश्वर की स्तुति का सौदा नहीं कर सकता। उपवास और अनिवार्य प्रार्थना मनुष्य जीवन के दो डैनों की तरह हैं। धन्य है वह जो उनकी सहायता से सभी लोकों के प्रभु परमेश्वर के प्रेम रूपी स्वर्ग में विचरण करता है।"*

बहाउल्लाह ने दैनिक अनिवार्य प्रार्थना और उपवास के पालन को जो अत्यधिक महत्व दिया है उससे मित्रगण लम्बे समय से सुपरिचित रहे हैं, लेकिन उस विधान के और भी अनेक पहलू विश्व भर में लागू नहीं किए गए थे, जैसे वे जिनका सम्बंध शुद्धिकरण, यात्रा और छूट

गई प्रार्थनाओं की क्षतिपूर्ति से था। अब यह कदम उठाया गया है। अतः अनिवार्य प्रार्थना और उपवास से सम्बंधित विधानों के सभी तत्व अब, बिना किसी अपवाद के, लागू हैं।

हमने यह भी तय किया है कि सभी जगहों के बहाईयों के लिए अब 'किताब-ए-अकदस' के इन वचनों को हृदयंगम करने का समय आ गया है: *"यह नियत किया गया है कि न्याय के प्रभु, परमेश्वर, में आस्था रखने वाला हर अनुयायी अपने हाथों और फिर अपने चेहरे को धोने के बाद, आसन ग्रहण करेगा और ईश्वर की ओर अभिमुख होते हुए, पंचानवे बार 'अल्लाह-उ-आभा' का पाठ करेगा। जब स्वर्गों के रचयिता ने, महिमा और सामर्थ्य के साथ, स्वयं को अपने नामों के सिंहासन पर विराजमान किया तो उसका ऐसा ही आदेश हुआ।"* सभी लोग उपासनापूर्ण ध्यान की इस सामान्य क्रिया के माध्यम से उनकी आत्माओं को प्राप्त होने वाली आध्यात्मिक समृद्धि का अनुभव प्राप्त करें।

मित्रों के बीच प्रेमपूर्ण सहयोग, समुदाय के स्तर पर आराधना और प्रभुधर्म एवं अपने मानव बंधुओं की सेवा के माध्यम से व्यक्तिगत भक्ति से उत्पन्न आध्यात्मिक विकास प्रत्येक स्थान पर ज्यादा प्रबल होता है। धार्मिक जीवन के ये सामुदायिक पहलू मशरिकुल-अज़कार के नियम से जुड़े हुए हैं जो 'किताब-ए-अकदस' में प्रकटित है। हालांकि अभी स्थानीय मशरिकुल-अज़कारों के निर्माण का समय अभी नहीं आया है, किन्तु सबके लिए सुलभ उपासना के लिए नियमित बैठकों का आयोजन और मानवतावादी सेवा परियोजनाओं में बहाई समुदायों की संलग्नता बहाई जीवन के इस तत्व की अभिव्यक्ति हैं और ईश्वर के विधान के क्रियान्वयन की दिशा में अग्रसर एक कदम।

बहाउल्लाह ने लिखा है: *"अपनी ओर से एक उदारता के रूप में, हमने वाणी के स्वर्ग को दिव्य प्रज्ञा और पवित्र आदेशों के नक्षत्रों से अलंकृत किया है। वस्तुतः, हम हैं सदा-क्षमाशील, परम उदार। हे समस्त क्षेत्रों में परमेश्वर के मित्रो! तू इन दिनों का मोल समझ और जो कुछ भी परमात्मा, उस परम महान, उस परम उदात्त, की ओर से भेजा गया है उसका दामन थाम। वह, वस्तुतः, इस 'महानतम कारागार' में तुम्हें याद करता है और तुम्हें उन बातों का निर्देश देता है जिनसे तुम उस महान पद के निकट आ सकोगे जो विशुद्ध हृदय वालों के नेत्रों को आह्लादित करती हैं। तुमपर और उन सब पर महिमा विराजे जिन्होंने उस जीवन्त स्रोत को प्राप्त किया है जो मेरी विलक्षण लेखनी से प्रवाहित होती है।"*

पवित्र देहली पर हमारी प्रार्थना है कि इन विधानों द्वारा पवित्र शिक्षाओं के जिस आध्यात्मिक मर्म को अभिव्यक्त किया गया है उन पर और अधिक ध्यान देने के फलस्वरूप सभी कृपाओं के 'स्रोत' के प्रति मित्रों की श्रद्धा और प्रबल होगी और इससे 'उसके' आध्यात्मिक रूप से भूखे बच्चों के मध्य से ग्रहणशील लोग प्रभुधर्म की ओर आकर्षित होंगे।

विश्व न्याय मन्दिर